**जिएं कंवल खिली, कनि खुशबूइ खुशीअ सां,**
**तिएं साधू ड्रियनि सभ खे, अन्भई अण मुल्ही,**
**वठनि विधि वेसाह सां, के आशिक असुली,**
**मेटे कलिप कुली, सामी अचनि संतोख में.**

*सामी साहब साधु-संतों के स्वभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं, जिस प्रकार कमल के फूल खिलते हैं और प्रसन्न चित्त से अपनी सुगंध चारों और बिखेर देते हैं, उसी प्रकार साधुजन सभी सामान्यजनों को अनमोल ज्ञान-प्रकाश देकर तृप्त कर देते हैं। किन्तु जो सच्चे प्रेमी भक्त हैं, वे ही साधु-संतों में पूर्ण विश्वास रख कर वह ज्ञान विधिपूर्वक ग्रहण करते हैं। प्रभु से प्रेम करने वाले अपने अंदर से अविद्या, भ्रम आदि को निकाल कर अंतरात्मा के साक्षात्कार का अलौकिक सुख-संतोष पाते हैं।*

जिस प्रकार परमात्मा की महिमा अपरंपार है, इसी प्रकार परमात्मा-स्वरूप सच्चे साधु-संतों की भी महिमा असीम है। सच्चे संत निष्कलंक, मोह-ममता रहित और नि:स्वार्थी होते हैं, वे परोपकारी होते हैं, समाज का हित करने वाले होते हैं। वे सूर्य की तरह संसार में सब पर उपकार करते हैं। साधु-संतों की कथनी और करनी में अंतर नहीं होता। सम-दृष्टि धारण किये हुए संतों के हृदय में करुणा का भाव रहता है। संत तुकाराम ने साधु का यह लक्षण बताया है,

**जे का रंजले गांजले। त्यांसी म्हणे जो आपुले।**
**तोचि साधु ओळखावा। देव तेथेचि जाणावा।।**

संत तुकाराम महाराज ने सच ही कहा है कि जो मनुष्य संसार के दुखी मनुष्यों को अपना मानता है, उनके दु:ख दूर करने का प्रयत्न करता है, उसे ही साधु/संत कहना चाहिए और उसी में परमात्मा का निवास मानना चाहिए। संत कबीर भी यही कहते हैं- 'कबीरा, सोई पीर है, जो जानै पर पीर।' दूसरों का दु:ख जानने वाले, सारे संसार का कल्याण चाहने वाले सच्चे साधुजन सच्चाई की मूर्ति होते हैं। ऐसे साधु-संतों ने ही सत्य (परमेश्वर) को पहचाना है और उसे सगुण-स्वरूप प्रदान कर लाखों-करोड़ों मनुष्यों के अंत:करण को ज्ञान के प्रकाश से भर दिया है। ऐसे कल्पवृक्ष समान साधुओं की महिमा सामी साहब ने भी गायी है। संत दादू के शब्दो में-

**दादू जिन प्राणी करि जणिया, घर बन एक समान।**
**घर मांहै बन ज्यूं रहे, सोई साधु सुजान।।**

■